प्रधानमंत्री द्वारा हैनोवर मेले का उद्घाटन

दिनांक 23 अप्रैल, 2006
जर्मनी

"हैनोवर मेले के उद्घाटन के अवसर पर यहां मौजूद होने पर मुझे गौरव महसूस हो रहा है। भारत को 21 वर्षों के बाद एक बार फिर इस मेले में भागीदार बनने पर गर्व है। इस बड़े विश्व मेले में अपने प्राचीन देश का नया चेहरा प्रस्तुत करने पर भारतीय उद्योग को प्रसन्नता है। हम हैनोवर के लोगों और मेले के आयोजकों के आतिथ्य सत्कार और मैत्री के लिए उनके आभारी हैं।

भारत और जर्मनी की जनता के बीच मैत्री के घनिष्ठ और मधुर संबंध रहे हैं। दोनों देशों के लोगों के बीच विचारों, अनुभवों और व्यापार का निरन्तर आदान-प्रदान होता रहा है। इस मेले में हमारी भागीदारी दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों के नए गुणात्मक स्तर की परिचायक है।

भारत की नजर में जर्मनी विज्ञान, प्रौद्योगिकी और संस्कृति के क्षेत्र में एक प्रमुख शक्ति है। नए भारत के निर्माण में जर्मनी की भूमिका को हम कृतज्ञता के साथ याद करते हैं। आपकी विशेषज्ञता से हमें हमारे शुरू के इस्पात संयंत्रों की स्थापना में मदद मिली। प्रौद्योगिकी की दृष्टि से भारत के आधुनिकीकरण में जर्मनी की कम्पनियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और अभी भी निभा रही हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है और यह बढ़ा-चढ़ा कर कहने वाली बात नहीं है कि भारत के लोग **"मेड इन जर्मनी"** के निशान को टैक्नोलॉजी की दृष्टि से उत्तम गुणवत्ता और श्रेष्ठता का प्रतीक मानते हैं। इस ऐतिहासिक साझेदारी को और मजबूत बनाने में हमें बहुत बड़ा परस्पर लाभ दिखाई देता है। हमारे सामने भविष्य में परस्पर सहयोग की महान संभावनाएं हैं।

भारत इस समय एक ऐतिहासिक मोड़ पर है। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ कि खुले बाजार की व्यवस्था और स्वतंत्र संसदीय लोकतंत्र के वातावरण का सदियों से गरीबी, अज्ञानता और रोगों की मार झेल रहे लाखों-करोड़ों लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए उपयोग किया गया हो। आज भारत को लेकर हमारे सामने एक नया सपना है कि भारत समन्वित विश्व अर्थिक व्यवस्था में बढ़-चढ़कर सक्रियता से भाग ले रहा है। हम खुली और उदार अर्थव्यवस्था के प्रति समर्पित हैं, जो विश्व अर्थव्यवस्था की नई वास्तविकताओं के अनुरूप हो। हम अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रणाली में अपनी मौजूदगी को बढ़ाना चाहते हैं। यूरोपीय संघ की प्रणाली में जर्मनी के समर्थन से भारत को लाभ पहुंचा है। जिस तरह से हम समझते हैं कि यूरोप में जर्मनी हमारा स्वाभाविक साझीदार है, उसी तरह से हमें उम्मीद है कि जर्मनी भी एशिया में भारत को अपना स्वाभाविक साझीदार समझेगा।

जैस-जैसे शुल्क संबंधी प्रतिबंधों के बारे में नीतियां उदार होती जा रही हैं और पूंजी निवेश के लिए वातावरण और बेहतर होता जा रहा है, भारत की नीतियां भी उदारवादी, खुली और आकर्षक होती जा रही हैं। विदेशी पूंजी निवेश की दृष्टि से भारत की नीतिगत व्यवस्थाएं सबसे अधिक उदार देशों जैसी हों। हमने अपनी अर्थव्यवस्था के अधिकतर क्षेत्रों को विदेशी पूंजी निवेश के लिए खोल दिया है। मैडम चान्सलर ने हाल ही में **छोटे-छोटे कदमों** के महत्व का जिक्र किया था। मैं भी यही कहना चाहता हूँ कि पिछले 15 वर्षों में भारत ने कई कदम उठाए हैं, जिससे काफी बड़ी दूरी तय हुई है। हमारा और आगे जाने का दृढ संकल्प है।

फिलहाल हम बुनियादी ढांचे पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। हमने शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में परिवहन, सड़क सम्पर्कों, बिजली तथा ऊर्जा के क्षेत्र में पूंजी निवेश बढ़ाने की योजना की घोषणा की है। राजमार्ग से संबंधित हमारी योजना, जो विश्व की सबसे बड़ी योजनाओं में से एक है, इस समय लगभग पूरी हो रही है। हमारी रेलवे प्रणाली, जो विश्व की सबसे बड़ी प्रणालियों में से एक है, उसे नई टैक्नोलॉजी के उपयोग से आधुनिक बनाया जा रहा है।

बन्दरगाहों और हवाई अड्डों में भी नई गतिविधियां हो रही हैं, क्योंकि पूंजीनिवेश और संचालन के मामले में निजी क्षेत्र तथा सरकार और निजी क्षेत्र की साझेदारी को बढ़ावा दिया जा रहा है। इन कार्यक्रमों से निर्माण और इंजीनियरी की फर्मों के लिए महत्वपूर्ण अवसर पैदा होंगे। सामान्य अनुमान के अनुसार अकेले बुनियादी ढांचा क्षेत्र में हमारी अर्थव्यवस्था डेढ ख़रब डालर से अधिक की राशि खपा सकती है। मैं जर्मनी की कम्पनियों से आग्रह करता हूँ कि वे इन नई ढांचागत सुविधाओं के निर्माण के लिए आगे आएं।

भारत में विनिर्माण के क्षेत्र में भी क्रान्ति आ रही है। पिछले दो वर्षों में विनिर्माण के क्षेत्र में 9 से 10 प्रतिशत की विकास दर प्राप्त की गई है। निकट भविष्य में हम इसे 12 प्रतिशत करना चाहते हैं। आने वाले वर्षों में उम्मीद है कि भारत ढांचागत सुविधाओं वाला प्रमुख देश बन जाएगा। इसी के साथ ही भारतीय उद्योग की पुनर्रचना से यह विकास के लिए बहुत बड़ी शक्ति बन गया है । वास्तव में भारत की कई फर्मों ने जर्मनी में अपनी मौजूदगी साबित की है। हमारी फर्में गुणवत्ता, लागत और उत्पादकता के मानदंडों की दृष्टि से विश्व स्तर का मुकाबला करती हैं।

भारत और जर्मनी के सामने मिलकर काम करने के बहुत अवसर हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के रसायन क्षेत्र, औषधि क्षेत्र, ऑटो कल-पुर्जे और इलैक्ट्रोनिक्स जैसे कुछ नए क्षेत्र जर्मनी की विशेषज्ञता के अनुरूप हैं। जर्मनी के छोटे और मझौले उद्योग क्षेत्र और भारत के छोटे और मझौले उद्योग क्षेत्र के बीच नई साझेदारी की संभावना दोनों देशों के लिए दिलचस्पी का विषय है। उभरते हुए ज्ञान का क्षेत्र भारत और जर्मनी के बीच सहयोग का नया क्षेत्र है। डिजाइन, अनुसंघान और विकास तथा नवीकरण के संबंध में हमारे कौशल और तकनीकें, सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी, मीडिया और मनोरंजन आदि क्षेत्रों के लिए लाभकारी हैं। इस संदर्भ में हमें दोनों देशों के बीच अंतरिक्ष, विज्ञान और टैक्नोलॉजी तथा नैनो-टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में सहयोग की परम्परा को भी आगे बढ़ाना चाहिए। अब समय आ गया है कि हम इस सहयोग के नया स्वरूप दें। जर्मनी के विशेषज्ञों के लिए यह समय उभरते ज्ञान के भंडार से लाभ उठाने का है।

हमारे आर्थिक सहयोग को और अधिक ठोस बनाने के लिए हमें व्यापार और पूंजी निवेश के रास्तों की अड़चनों पर ध्यान देना होगा। कुछ भारतीय कम्पनियों को वीजा और परमिट के संबंध में जर्मनी में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ा है । रोजगार और कर-संबंधी कानूनों के अलावा पर्यावरण तथ श्रम संबंधी कुछ मानदंड भी समस्या पैदा कर रहे हैं। हालांकि हमारी कम्पनियों ने अपनी संचालन प्रक्रियाओं में संशोधन किए हैं, लेकिन कुछ और ऐसी मांगें हैं जो मुश्किलें पैदा करती हैं।

जर्मनी, व्यापार की दृष्टि से विश्व के प्रमुख देशों में से एक है। विश्व व्यापार प्रणाली में भारत की बढ़ती पैठ से दोनों देशों को द्विपक्षीय स्तर पर और बहु-स्तरीय मंचों पर मिलकर काम करने के ऐसे अवसर मिले हैं, जिससे हम उपयोगी साझेदारी के जरिए एक नियमों पर आधारित संभावी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लिए काम कर सकते हैं। अन्य बातों के अलावा हम यूरोपीय संघ और विश्व व्यापार संगठन में जर्मनी के साथ मिलकर काम करने को उत्सुक हैं, जिससे कि व्यापार वार्ता के दोहा दौर की सफलता सुनिश्चित हो सके।

भारत और जर्मनी परस्पर उपयोगी सहयोग के लम्बे इतिहास के साथ परम्परागत मित्र रहे हैं। उभरते, विकासोन्मुखी और जीवन्त भारत में जर्मनी के लिए नए अवसर हैं, जिससे वह भारत के साथ अपने सहयोग को और मजबूती प्रदान कर सकता है। मैं जर्मनी के लोगों की प्रसन्नता और खुशहाली की कामना करता हूँ। मेरे लिए यह भी कोई कम महत्वपूर्ण नहीं, कि मैं वर्तमान संदर्भ में आगामी विश्व कप के आयोजन और खेलों में आप सबकी सफलता के लिए भी आपको शुभकामनाएं दूं।"